THRU the BIBLE



मोड़

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 32:1-32
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 32:1-32

प्रिय परमेश्वर,

हम आपको इस मनन के समय में आमंत्रित करते हैं। हमारी सहायता कीजिए कि हम अपनी ताकत के भरोसे संघर्ष करना छोड़ दें और पूरी तरह आपके अधीन हो जाएँ। हमें सिखाइए कि सच्ची विजय संघर्ष करने से नहीं, बल्कि नम्र समर्पण के साथ आपसे दृढ़ता से लगे रहने से मिलती है।

आमीन।

परमेश्वर के साथ याकूब के रिश्ते में आया अहम मोड़

उत्पत्ति 32

जब याकूब ने बुढ़ापे में अपने जीवन के बारे में सोचा, तो उसे यह समय अपने **जीवन का सबसे अहम पल याद आया - यह परमेश्वर के साथ उसके रिश्ते में एक बड़ा बदलाव लाने वाला मोड़ था।** अब तक, याकूब ने कभी भी परमेश्वर के सच्चे भक्त जैसा व्यवहार नहीं किया था। उसने परमेश्वर के प्रति इतनी खराब गवाही दी थी कि दुनिया उसे कभी भी परमेश्वर का अनुयायी नहीं मानती।

याकूब का दिल जीतने के लिए परमेश्वर को उसे अनुशासित करना पड़ा (इब्रानियों 12:6)। याकूब को यह सीखने में 20 साल लग गए, और उसने निश्चित रूप से इसके लिए मेहनत की।

अब याकूब परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाला था। इसलिए परमेश्व र ने उससे सीधे व्यवहार करना शुरू किया, **ताकि उसे फल लाने, सच्ची सेवा करने और परमेश्वर की गवाही देने के योग्य बनाया जा सके।**

अपने भाई एसाव से मिलने का याकूब का डर

वायदे के देश में लौटते समय **याकूब की मुलाक़ात स्वर्गदूतों से हुई।** बेथेल में हुई अपनी पिछली मुलाक़ात की वजह से वह ज़रूर पहचान गया होगा कि वे कौन थे। जब उसने अपने देश की सीमा में प्रवेश किया, तो उसे पता था कि जल्द ही उसकी मुलाक़ात अपने भाई एसाव से होगी।

उसे याद आया कि उसने आखिरी बार 20 साल पहले एसाव को देखा था। एसाव उससे बहुत नाराज़ था। इसलिए इस बार, याकूब ने अपने आगे कुछ दूत भेजे और उन्हें निर्देश दिया कि वे कहें, "**जब तुम मेरे भाई एसाव के पास पहुँचो, तो उससे कहना, 'मेरे प्रभु एसाव।' और मेरा ज़िक्र करते हुए कहना, 'आपका सेवक, याकूब।'"याकूब** का रवैया बदल गया था। **उसने चालाकी से जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त किया था और एसाव का आशीर्वाद चुरा लिया था।** याकूब पहले एक धूर्त इंसान था, लेकिन अब उसकी बातें अलग थीं। शायद उसने लाबान से कुछ कड़े सबक सीखे थे।

दूत लौटकर याकूब के पास आए और बोले, **"हम आपके भाई एसाव से मिले। वह चार सौ पुरुषों को साथ लेकर आपसे मिलने आ रहा है।"**

अब **याकूब बहुत डरा हुआ था,** क्योंकि उसे पता नहीं था कि एसाव के मन में क्या है। उसने शायद अपने सेवकों से पूछा होगा, "क्या वह परेशान लग रहा था? या मेरे प्रति उसके मन में कड़वाहट या नफ़रत थी?" भले ही उन्होंने कहा हो, "नहीं, वह तो आपके आने से खुश लग रहा था," लेकिन याकूब ने सोचा कि शायद **एसाव इसलिए खुश था क्योंकि उसे बदला लेने का मौका मिल रहा था।** याकूब परेशान था। उसे लगा कि **वह खतरे में है, इसलिए उसने अपने दल को दो हिस्सों में बाँट दिया और उन्हें अलग-अलग दिशाओं में भेज दिया, ताकि अगर उसका भाई एक दल पर हमला करे, तो दूसरा दल बच सके।** फिर उसने कुछ अलग तरह से सोचने के संकेत दिए।



"हम प्रार्थना में अपनी परेशानियाँ प्रभु के सामने रखते हैं। फिर प्रार्थना पूरी होने पर, हम हर परेशानी को वापस अपनी पीठ पर लाद लेते हैं और उन्हें लेकर फिर से आगे बढ़ जाते हैं।"

याकूब मदद के लिए परमेश्वर को खोजता है

याकूब अपने संकट में परमेश्वर से मदद मांगता है।

"फिर याकूब ने कहा, **"हे यहोवा, हे मेरे दादा अब्राहम के परमेश्वर, हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर, तूने तो मुझसे कहा था कि अपने देश और जन्म-भूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूँगा: तूने जो-जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यरदन नदी के पार उतर आया, और अब मेरे दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे-ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूँ। मेरी विनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा मैं तो उससे डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और माँ समेत लड़कों को भी मार डाले। तूने तो कहा है, कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूँगा, और तेरे वंश को समुद्र के रेतकणों के समान बहुत करूँगा, जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जा सकते।""** (उत्पत्ति 32:9-12)

याकूब ने परमेश्वर को पुकारा, क्योंकि वही **उसके पिता अब्राहम के परमेश्वर और उसके पिता इसहाक के परमेश्वर थे।** पहली बार उसने कहा, **"मैं तेरी दया की छोटी-सी बात के भी योग्य नहीं हूँ।"**

पहली बार, **उसने माना कि वह परमेश्वर की नज़र में पापी है।** जब कोई व्यक्ति **इस तरह परमेश्वर की ओर बढ़ना शुरू करता है, तो परमेश्वर उससे बातचीत करते हैं।**

याकूब की एसाव को शांत करने की योजना

याकूब की रात बहुत कठिन बीती। **उसने सोचा कि एसाव को कैसे शांत किया जाए। उसने बहुत उदार उपहार भेजने की योजना बनाई—भेड़-बकरियाँ, ऊँट, बैल और गधे-** जिन्हें तीन दलों में बाँट दिया गया। जब एसाव याकूब की ओर आएगा, तो सबसे पहले उसका सामना पहले दल से होगा, और सेवक कहेगा, **"यह आपके भाई याकूब की ओर से आपके लिए एक भेंट है।"** फिर एसाव थोड़ा आगे बढ़ेगा और दूसरे झुंड से मिलेगा, और उसके बाद तीसरे से। **तब तक याकूब को आशा थी कि एसाव का क्रोध शांत हो जाएगा।**

याकूब ने अपनी सारी संपत्ति और अपने पूरे परिवार को यब्बोक नाले के पार भेज दिया, लेकिन वह स्वयं दूसरी ओर ठहरा रहा, ताकि यदि उसका भाई एसाव आए, तो वह याकूब को मार दे, पर उसके परिवार को बख्श दे।

जब याकूब ने प्रार्थना की, तो उसने प्रभु को याद दिलाया, "तूने ही मुझसे अपने देश लौटने को कहा था। **तूने कहा था कि तू मेरी रक्षा करेगा।" लेकिन क्या उसे परमेश्वर पर विश्वास था?** नहीं। उसने ये सारे इंतज़ाम किए, **जिनसे पता चलता है कि उसे परमेश्वर पर ज़रा भी भरोसा नहीं था।** अक्सर हम भी ऐसा ही करते हैं। हो सकता है कि हम प्रार्थना में अपनी परेशानियाँ प्रभु के सामने रखें। **लेकिन प्रार्थना के बाद, हम उन परेशानियों को वापस अपने कंधों पर लाद लेते हैं** और उन्हें लेकर फिर से आगे बढ़ जाते हैं। **हम उस पर विश्वास नहीं करते, है ना? हम उस पर उतना भरोसा नहीं करते जितना हमें करना चाहिए।**



याकूब के गलत चुनावों के परिणाम

याकूब अपने जीवन के गलत चुनावों के परिणामों का सामना कर चुका था, और इससे उसका मन भय और संदेह से भर गया था। उसने एसाव के साथ बुरा व्यवहार किया था। परमेश्वर ने उसे कभी नहीं कहा था कि वह इस तरीके से जन्मसिद्ध अधिकार और आशीर्वाद प्राप्त करे। परमेश्वर स्वयं उसे यह दिला देते। और अब याकूब अकेला प्रतीक्षा कर रहा था।

लेकिन याकूब अकेला नहीं था। लाबान उसके पीछे था और उसका भाई एसाव उसके आगे। **याकूब उन दोनों में से किसी का भी मुक़ाबला नहीं कर सकता था। वह अब एक मुश्किल स्थिति में फँस गया था,** और उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस तरफ़ जाए। उस रात वह अकेला था क्योंकि वह अकेला रहना चाहता था, और वह कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं चाहता था।

याकूब के साथ किसने कुश्ती की?

अब, हमें बताया गया है कि **याकूब का सामना एक ऐसे आदमी से हुआ जो पूरी रात उससे कुश्ती लड़ता रहा।** वह आसानी से हार मानने वाला नहीं था। यह कौन था जिसने उस रात याकूब से कुश्ती लड़ी? **यह कोई और नहीं बल्कि जन्म से पहले का मसीह था।** (इस रात के बारे में और जानकारी के लिए होशे 12:1-5 भी देखें।)

उस रात यह हुआ: **"और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पौ फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा।** जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब **उसकी जाँघ की नस को छुआ; और याकूब की जाँघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। तब उसने कहा, "मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होनेवाला है।"** याकूब ने कहा, **"जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।"** और उसने याकूब से पूछा, **"तेरा नाम क्या है?"** उसने कहा, "याकूब।" उसने कहा, **"तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।"** (उत्पत्ति 32:24-28)

याकूब कुश्ती नहीं लड़ रहा था; वह उस 'एक' को थामे हुए था। **याकूब को समझ आ गया कि परमेश्वर के साथ संघर्ष करने या विरोध करने से कुछ हासिल नहीं होता। उनके साथ आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका है खुद को सौंप देना और बस उन्हें थामे रहना।** अब्राहम ने यह बात सीख ली थी, और इसीलिए उसने परमेश्वर की बात पर "आमीन" कहा। **उसने परमेश्वर पर विश्वास किया, और परमेश्वर ने उसे धर्मी माना।** अब्राहम अपनी ताकत के आखिरी छोर तक पहुँच गया था और उसने परमेश्वर को गले लगा लिया।

यह सबक हम सबके लिए है, जब हम ऐसी स्थिति में होते हैं जहाँ हमें परमेश्वर पर भरोसा करने की ज़रूरत होती है। जब आप डटे रहने को तैयार होते हैं, तो वह आपकी मदद के लिए तैयार रहते हैं। याकूब ने तब तक उनका विरोध किया **जब तक कि परमेश्वर के स्पर्श ने उसे अपाहिज नहीं कर दिया।** फिर, यह पहचानकर कि वह कौन थे, **याकूब उनसे तब तक लिपटा रहा जब तक उन्होंने उसे आशीष नहीं दी। इसके बाद से हम याकूब में बदलाव देखते हैं। परमेश्वर ने याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखकर उसके दिल में आए इस बदलाव को चिह्नित किया। वह एक नया इंसान बन गया था।**



परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 32 से हमारे लिए सीख

1

जब हम अपनी अयोग्यता को स्वीकार करते हैं, तब परमेश्वर हमसे बात करते हैं।

- **सत्य:** पहली बार याकूब ने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने उस पर जो दया की है, उसके सबसे छोटे भाग के भी वह योग्य नहीं है। जब कोई व्यक्ति यह स्वीकार करते हुए परमेश्वर के पास आता है कि वह उनकी दृष्टि में एक पापी है, तब परमेश्वर उससे बात करते हैं।
- **नए नियम से संबंध:** लूका 18:13-14 में चुंगी लेने वाले का वर्णन है, जिसने अपनी छाती पीटते हुए कहा, "हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।" वह धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया। परमेश्वर नम्र लोगों के निकट आते हैं, आत्मनिर्भर और घमण्डी लोगों के नहीं।

2

त्मिक विजय संघर्ष करने से नहीं, बल्कि समर्पण करने से मिलती है।

- **सत्य:** याकूब सारी रात कुश्ती करता रहा, परन्तु उसे विजय तब तक नहीं मिली जब तक परमेश्वर ने उसकी जाँघ के जोड़ को छूकर उसे लंगड़ा नहीं कर दिया। तभी याकूब ने लड़ना छोड़ दिया और उनसे लिपट गया। उसने सीखा कि परमेश्वर का विरोध करके कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता-आगे बढ़ने का एक ही मार्ग है: उनके सामने समर्पण करना और उनसे दृढ़ता से लगे रहना।
- **नए नियम से संबंध:** याकूब 4:7-8 "इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ। और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।"2 कुरिन्थियों 12:9 "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।"

3

सच्चा विश्वास सारा बोझ परमेश्वर पर छोड़ देता है।

- **सत्य:** याकूब ने सुरक्षा के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर को उनके वादों को याद दिलाया, लेकिन फिर डर के कारण बचाव के लिए कई इंतज़ाम भी किए -जिससे पता चलता है कि उसे परमेश्वर पर सच में भरोसा नहीं था। हम भी अक्सर ऐसा ही करते हैं: हम प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन प्रार्थना खत्म होने के बाद, हम वही बोझ वापस उठा लेते हैं और खुद ही उसे ढोते रहते हैं।
- **नए नियम से संबंध:** 1 पतरस 5:7 "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।" फिलिप्पियों 4:6-7 "किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और विनती के द्वारा, धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित की जाएं।

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

अपनी अयोग्यता को मानना: जब आप प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाते हैं, तो क्या आपको अपनी कोशिशों की वजह से परमेश्वर से मदद पाने का हक महसूस होता है, या आप उनके पास एक नम्र दिल के साथ जाते हैं और यह मानते हैं कि आप उनकी दया के लायक नहीं हैं?

सवाल 2

समर्पण बनाम संघर्ष: याकूब की जाँघ का जोड़ इसलिए छुआ गया ताकि वह कुश्ती करना छोड़ दे और परमेश्वर से लिपट जाए। आपके जीवन में ऐसी कौन-सी "लंगड़ाहट" या कमजोरी है, जिसका उपयोग शायद परमेश्वर आपको अपनी शक्ति पर निर्भर रहना छोड़कर उन पर भरोसा करना सिखाने के लिए कर रहे हैं?

सवाल 3

बोझ सौंपना: किसी चिंता के बारे में प्रार्थना करने के बाद, वह कितनी जल्दी आपके मन में वापस आ जाती है? अगर वह तुरंत वापस आ जाती है, तो क्या आपने सचमुच वह बोझ परमेश्वर पर "डाल" दिया था, या सिर्फ़ उन्हें उसके बारे में बताया था?

सवाल 4

किसी ऐसे मौजूदा झगड़े या समस्या के बारे में सोचें जिसे आप सिर्फ़ अपनी इच्छा-शक्ति से "ठीक" करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर आप संघर्ष करना छोड़ दें और इसके बजाय परमेश्वर से पूछें, "आप मुझे इसके ज़रिए क्या सिखाना चाह रहे हैं?" तो यह कैसा होगा?

सवाल 5

जब प्रार्थना करने के बाद वही चिन्ता फिर लौट आए,तो समस्या पर दोबारा सोचने के बजाय, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के लिए उसकी स्तुति करने का अवसर मानें।

THRU the BIBLE

हमारे रिसोर्स का इस्तेमाल करें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें और 200 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें।

Visit ttb.bible

हमारी वेबसाइट पर 'स्क्रिप्चर एंगेजमेंट' बुक सीरीज़ के और भी वॉल्यूम वाली इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप बुक देखें।

Visit ttbsa.org